1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

वर्ष 47, अंक 48 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 अक्तूबर, 2024 से रविवार 20 अक्तूबर, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य समाज के सेवा कार्यों, प्रकल्पों, योजनाओं और गतिविधियों की समीक्षा संगोष्ठी संपन्न

पहली बार सार्वजनिक रूप से की गई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और सभा के सहयोग से चल रही सभी कार्य योजनाओं की समीक्षा : प्रातः 9 से सायं 6:30 बजे तक अनवरत चली समीक्षा संगोष्ठी

दिल्ली सभा की भांति सेवा योजनाओं को अपने क्षेत्रों में संचालित करें प्रांतीय सभाएं - सुरेश चन्द्र आर्य

देश की दिशा और दशा को बदलने के लिए सामर्थ्यवान है-आर्य समाज - सुरेन्द्र कुमार आर्य

नए भारत एवं नए विश्व के निर्माण में अहम भूमिका निभा रहा, आर्य समाज - धर्मपाल आर्य

आर्य समाज प्रारंभ से ही मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के अखंड यज्ञ के प्रति समर्पित रहा है। संपूर्ण जगत की उन्नति और कल्याण के लिए शिक्षा, चिकित्सा और सुरक्षा के रूप में अनगिनत सेवा कार्य आर्य समाज निरंतर करता आ रहा है। एक वाक्य में अगर कहा जाए तो आर्य समाज द्वारा की जा रही मानव सेवा नए भारत और नए विश्व के निर्माण में एक अहम भूमिका है। इस वृहद यज्ञ में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की नियंत्रक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि की प्रेरणा के अनुरूप अपने दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर रही है। दिल्ली की सभी समाजों के अनुभवी अधिकारी, कार्यकर्ता, और सदस्यों ने सदा से ही इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गत 2 अक्टूबर 2024 को आर्य समाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1 के मनोहारी प्रांगण में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज के माध्यम से संचालित विभिन्न सेवा कार्यों, प्रकल्पों, योजनाओं, गतिविधियों की जानकारी एवं समीक्षा को लेकर एक दिवसीय पूर्ण कालिक संगोष्ठी सफलता पूर्वक संपन्न हुई। इस प्रेरणाप्रद संगोष्ठी में सर्वादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन,श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, आर्य, केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी सहित अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ, शुद्धि सभा, दिल्ली के सभी वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी, आर्य वीर दल, वीरांगना दल, दिल्ली के समस्त आर्य समाजों के प्रधान-मंत्री एवं अनुभवी कार्यकर्ता, अधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे। संगोष्ठी का शुभारंभ वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ दीप प्रज्वलन से हुआ और सर्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र

- शेष पृष्ठ 3-4-5 एवं 7 पर

दीप प्रज्ज्वलन कर संगोष्ठी का शुभारम्भ करते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, पूर्व राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद, श्री अतुल वर्मा, श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री पी.सी. सूद, श्री डी.पी. यादव, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री जोगेन्द्र खट्टर एवं श्री सतीश चड्डा

200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना का 150वां वर्ष

आर्यसमाज नैरोबी की 121वीं वर्षगांठ और आर्य स्त्री समाज की 106वीं जयन्ती

विश्वभर के आर्यजनों की उपस्थिति में विभिन्न ऐतिहासिक कार्यक्रम सम्पन्न

अफ्रीकी देश कीनिया की राजधानी नैरोबी में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

देववाणी-संस्कृत

वृद्धों का लाठी परमेश्वर

वेद-स्वाध्याय

आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवपस्पते। उश्मसि त्वा सधस्थ आ।।
-ऋ० 8/45/20
ऋषिः - त्रिशोकः काण्वः ।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः - गायत्री।।

शब्दार्थ-शवसः पते=हे सब बलों के स्वामिन्! **जिव्रयः**=बुढ्डा पुरुष **रम्भं न**= जैसे डण्डे को **त्वा**=उस प्रकार तेरा मैंने **ररम्भ** = अवलम्बन कर लिया है और अब मैं **त्वा**=तुझे **सधस्थे**= अपने समान स्थान में **आ**= आमने-सामने-आँखों के सामने **उश्मसि**= चाहता हूँ-देखना चाहता हूँ।

विनय- हे भगवन! मैं बुढ्डा हूँ और और तुम मेरी लाठी हो। तुम मेरे सहारे हो। मेरा इस जन्म का यह देह चाहे वृद्ध न दीखता हो, परन्तु मैं सच्चे अर्थ में जीर्ण हूँ, पुराना हूँ, अतएव अनुभवी हूँ। मैं न जाने कितनी योनियों में फिरा हूँ-सब संसार भोग चुका हूँ, परन्तु अब मैं तुम्हें 'शवसस्पते' करके सम्बोधन करता हूँ, क्योंकि मैंने सुदीर्घ अनुभव से जान लिया है कि सब बलों के स्वामी तुम्हीं हो। मैंने कभी बड़ा धनाढ्य होकर धनबल का अभिमान किया है, किसी समय यह समझा है कि मेरे साथ इतना बड़ा दल है, अतः जो मैं चाहूँ कर सकता हूँ; इस प्रकार दलबन्दी के बल को भी आजमाया है; कभी अपने बुद्धि-बल, चतुराई-बल के मुकाबले में सब संसार को तुच्छ समझा है। शरीर-बलों और शस्त्र-बलों का तो कहना ही क्या है! पर इतने लम्बे, अनगिनत योनियों के सुदीर्घ अनुभवों के बाद जीर्ण होकर-पुराना होकर अब समझा है कि सब बलों के स्वामी तो तुम हो। इसलिए अब और सब बलों का सहारा छोड़कर एक तुम्हारा सहारा पकड़ लिया है। हे मेरे एकमात्र बल! तुम मुझसे अब क्षणभर के लिए भी दूर मत होओ। अब यदि मैं क्षणभर के लिए भी तुमको भूल जाता हूँ-अपने मानसिक विचार-नेत्र के सामने से क्षणभर के लिए भी तुम्हें ओझल पाता हूँ, तो मैं व्याकुल हो जाता हूँ- एकदम निस्सहाय हो जाता हूँ, अतः अब तो सतत यह कामना है कि तुम सदा ही मेरे सामने और मेरे साथ ही बने रहो। बुढ्डे की लाठी जब आँखों के सामने पड़ी हो, पर उसकी पहुँच के परे पड़ी हो, तब तो उसका सहारा न पा सकते हुए उसका दीखना बुढ्डे के लिए और भी दुःखदायक हो जाता है। इसलिए हे मुझ वृद्ध की लाठी! हे मुझ निर्बल के बल! हे मेरे एकमात्र सहारे! तुम अब सदा मेरे साथ रहो-सधस्थ बने रहो। तुमसे तनिक भी दूर होकर अब मैं नहीं रह सकता।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या अंधविश्वास ले रहा है बच्चों की बलि?

हाथरस में जिस स्कूल की तरक्की के लिए क्लास-2 के बच्चे की हत्या की गई , उसका मालिक बीटेक पास है। मलेशिया में नौकरी करता था। 4 साल पहले गांव लौटा। यहां स्कूल खोला, लेकिन आशा अनुरूप सफल नहीं हुआ, बल्कि कर्ज के जाल में फंसता चला गया। 20 लाख का कर्ज हो गया। जब कोई ऑप्शन नहीं दिखा, तो अपने तांत्रिक पिता की बातों में आ गया। फिर उसने बच्चे की बलि देने की साजिश रची।

दूसरे पूरे देशभर में पिछले दिनों पौराणिक जितिया व्रत मनाया गया। जितिया एक व्रत है जिसमें निर्जला (बिना पानी के) उपवास पूरे दिन किया जाता है और माताओं द्वारा अपने बच्चों की लंबी उम्र, कल्याण के लिए मनाया जाता है, लेकिन इस बार समूचे बिहार राज्य में 49 लोग डूब गए, जिनमें से 41 लोगों की मौत हो गई । जिनमें अधिकांश छोटे बच्चे भी शामिल थे, यानी जिन बच्चों की लंबी आयु के लिए यह उपवास किया गया, वो ही डूब गए।

पिछले साल अंधविश्वास के चलते ही उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में तांत्रिक के कहने पर एक मां ने अपने ही बेटे की दे डाली बलि। 4 माह के मासूम को फावड़े से काट डाला था। ऐसी यह वो घटनाएं हैं जिन्होंने पूरे समाज को सकते में डाल दिया है।

इन घटनाओं ने एक बार फिर सवाल खड़े किए हैं। यह सवाल न हमसे है और न आपसे, यह सवाल है सनातन वैदिक धर्म से कि क्या यह सारा अंधविश्वास धर्म से जुड़ा है? अगर हम कहेंगे नहीं, तो सवाल होगा कि हो सब कुछ हिंदू धर्म के नाम पर ही रहा है? अगर आप इन प्रश्नों के उत्तर तलाश करेंगे, तो विद्वान मानते हैं कि वैदिक धर्म में समय के साथ विकृतियां आती गईं, लोक परंपराओं की धाराएं भी जुड़ती गईं और अज्ञानता में लिप्त समाज में उन्हें वैदिक धर्म का हिस्सा माना जाने लगा। जैसे वटवृक्ष से असंख्य लताएं लिपटकर अपना अस्तित्व बना लेती हैं, लेकिन वे लताएं वृक्ष नहीं होती, उसी तरह वैदिक आर्य धर्म की छत्रछाया में अन्य परंपराओं ने भी जड़ फैला ली। बलि प्रथा का प्रचलन हिंदुओं के शाक्त और तांत्रिकों के संप्रदाय में ही देखने को मिलता है, लेकिन इसका कोई वैदिक आधार नहीं है। किन्तु आज भी इनका इसी रूप में जीवित रहना इस बात के जरूर संकेत देता है कि अंधविश्वास की जड़ें अभी भी देश में बहुत गहराई तक समाई हैं।

बात यहीं तक सीमित नहीं है, थोड़े समय पहले हैदराबाद में एक व्यक्ति ने एक बच्चे की बलि दे दी थी। उसने एक तांत्रिक के कहने पर चंद्र ग्रहण के दिन पूजा की और बच्चे को छत से फेंक दिया। तांत्रिक ने उसे कहा था कि ऐसा करने से उसकी पत्नी की लंबे समय से चली आ रही बीमारी ठीक हो जाएगी। ऐसी न जाने कितनी घटनाएँ हर रोज सुनने को मिलती हैं।

यदि देखा जाए तो आज समाज में अंधविश्वास का बाजार इतना बड़ा और बढ़ चुका है कि जिसकी चपेट में पढ़े-लिखे भी उसी तरह आते दिख रहे हैं, जिस तरह अशिक्षित लोग। जबकि यह लंबे संघर्ष के बाद मानव सभ्यता द्वारा अर्जित किए गए आधुनिक विचारों और खुली सोच का गला घोंटने की कोशिश है।

ऐसी घटनाएं पहले पूरे विश्व में होती रही हैं, लेकिन समय के साथ उन्होंने आधुनिकता को अपना लिया। पर भारत में धर्म के नाम पर यह सब कुछ पूर्व की भांति चल रहा है। क्योंकि मानव बलि के पीछे के तर्क सामान्य रूप से धार्मिक बलिदान जैसे ही हैं। मानव बलि का अभीष्ट उद्देश्य अच्छी किस्मत लाना और देवताओं को प्रसन्न करने की लालसा आदि में होता है। हमें नहीं पता कि बलि से प्रसन्न होने वाले इन काल्पनिक देवताओं को देवता कहें या राक्षस ? प्राचीन जापान में, किसी इमारत निर्माण की नीव में अथवा इसके निकट प्रार्थना के रूप में किसी कुंवारी स्त्री को जीवित ही

इन घटनाओं ने एक बार फिर सवाल खड़े किए हैं। यह सवाल न हमसे है और न आपसे, यह सवाल है सनातन वैदिक धर्म से है कि क्या यह सारा अंधविश्वास धर्म से जुड़ा है? अगर हम कहेंगे नहीं, तो सवाल होगा कि हो सब कुछ हिंदू धर्म के नाम पर ही रहा है? अगर आप इन प्रश्नों के उत्तर तलाश करेंगे, तो विद्वान मानते हैं कि वैदिक धर्म में समय के साथ विकृतियां आती गईं, लोक परंपराओं की धाराएं भी जुड़ती गईं और अज्ञानता में लिप्त समाज में उन्हें वैदिक धर्म का हिस्सा माना जाने लगा। जैसे वटवृक्ष से असंख्य लताएं लिपटकर अपना अस्तित्व बना लेती हैं, लेकिन वे लताएं वृक्ष नहीं होती, उसी तरह वैदिक आर्य धर्म की छत्रछाया में गलत परंपराओं ने भी जड़ फैला ली। बलि प्रथा का प्रचलन हिंदुओं के शाक्त और तांत्रिकों के संप्रदाय में ही देखने को मिलता है, लेकिन इसका कोई वैदिक आधार नहीं है। किंतु आज भी इनका इसी रूप में जीवित रहना इस बात के जरूर संकेत देता है कि अंधविश्वास की जड़ें अभी भी देश में बहुत गहराई तक समाई हैं।

दफन कर दिया जाता था, जिससे कि इमारत को किसी आपदा अथवा शत्रु-आक्रमण से सुरक्षित बनाया जा सके। दक्षिण अमेरिका में भी नरबलि का लंबा इतिहास रहा है। शासकों की मौत और त्योहारों पर लोग उनके सेवकों की बलि दिया करते थे। पश्चिमी अफ्रीका में उन्नीसवीं सदी के आखिर तक नरबलि दी जाती थी, या फिर चीन की महान दीवार के बारे में कहा जाता है कि उसे अनगिनत लाशों पर खड़ा किया गया था। लेकिन वह पौराणिक काल था, जिसमें मानव सभ्यता ज्ञान से दूर थी। हाँ, इसमें भारत का वैदिक कालखंड सम्मिलित नहीं होता, क्योंकि वेदों में ऐसे सैकड़ों मंत्र और श्लोक हैं, जिससे यह सिद्ध किया जा सकता है कि वैदिक धर्म में बलि प्रथा निषेध है और यह प्रथा हमारे धर्म का हिस्सा नहीं है। जो बलि प्रथा का समर्थन करता है, वह धर्मविरुद्ध दानवी आचरण करता है।

जब धर्म की सच्ची शिक्षा देने वाले ऋषि-मुनियों के अभाव में अज्ञान व अंधविश्वास, पाखंड एवं कुरीतियां तथा मिथ्या परंपराएं आरंभ हो गईं, उनके स्थान पर ढोंगी पाखंडियों के डेरे सजने लगे, तब इसका परिणाम देश की गुलामी था। इनके कारण देश को अनेक विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा और आज भी देश की धार्मिक व सामाजिक स्थिति संतोषजनक नहीं है। इस स्थिति को दूर कर विजय पाने के लिए देश से अज्ञान व अंधविश्वासों का समूल नाश करना जरूरी है, वरना धार्मिक तबाही पिछली सदी से कई गुना बड़ी होगी।

यदि सरकार राष्ट्रीय स्तर पर कानून बनाकर अंधविश्वास फैलाने वाले तत्वों के खिलाफ, उनका प्रचार-प्रसार कर रहे लोगों के खिलाफ एक्शन लेने का प्रावधान बना दे, तो आज भी काफी कुछ समेटा जा सकता है। ये सच है कि कानून तो अमल के बाद ही समाज के लिए उपयोगी बन पाता है, किंतु फिर भी उम्मीद है कि 21वीं सदी के दूसरे दशक में पहुंच चुके हमारे समाज को ऐसे ऐतिहासिक कानून की आंच में विश्वास और अंधविश्वास के बीच अंतर समझने में कुछ तो मदद मिलेगी। हमारा अतीत भले ही कैसा रहा हो, पर आने वाली नस्लों का भविष्य तो सुधर ही जाएगा।

तर्कवादी कहते हैं कि यह दुख की बात है कि एक ऐसा देश, जहां विज्ञान इतना

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य समाज के सेवा कार्यों, प्रकल्पों, योजनाओं और गतिविधियों की समीक्षा संगोष्ठी

आर्य जी को उपस्थित आर्यजनों ने उनके जन्मदिन की सामूहिक बधाई देते हुए उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना की।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित अधिकारियों को संबोधित करते हुए अपने संदेश में कहा कि आर्य समाज एक परोपकारी संगठन है, सदा से संसार के कल्याण की बात करता है, किंतु इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए समय-समय पर सिंहावलोकन अत्यंत आवश्यक है, इसी उद्देश्य से यह संगोष्ठी आयोजित की गई है। इस संगोष्ठी में आप सबका हार्दिक स्वागत और अभिनंदन है। आपने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की व्याख्या करते हुए कहा कि दिल्ली की समस्त आर्य समाज ही सभा का वास्तविक स्वरूप हैं , आज नए भारत और नए विश्व के निर्माण में आर्य समाज अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है, इस कार्य को हमें लगातार आगे बढ़ाते रहना है। आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में आर्य समाज के महापुरुषों से प्रेरणा लेने का संदेश देते हुए कहा कि हम-सब महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं को लेकर के आगे बढ़ें, समाज में जो आज्ञान-अविद्या और अंधकार, ढोंग, पाखंड फैला हुआ है, उसको दूर करने के लिए निरंतर प्रयास रत रहें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, शुद्धि सभा, समस्त वेद प्रचार मंडलों, आर्य वीर-वीरांगना दल दिल्ली एवं दिल्ली के समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के साथ-साथ देशभर की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रमुख अधिकारियों की रही पूर्ण भागीदारी

संगोष्ठी प्रातः 9 बजे से सायंकाल 6:30 बजे तक अनवरत चलती रही। बीच में जलपान और भोजन के बाद अपने निर्धारित समय अनुसार समस्त अधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे और सभी ने आर्य समाज के बढ़ते हुए सेवा कार्यों में सहयोग करने का भी संकल्प लिया

श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने अपने उद्बोधन में समस्त प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों और उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा की दिल्ली सभा द्वारा संचालित समस्त सेवा प्रकल्प, आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को आगे बढ़ा रहे हैं। इनसे प्रेरणा लेकर समस्त प्रांतीय सभाओं के अधिकारी भी अपनी-अपनी सभाओं के माध्यम से इन सेवा योजनाओं को अपने-अपने क्षेत्र में क्रियान्वित करने का प्रयास करें, क्योंकि वर्तमान की विपरीत परिस्थितियों में हमें सनातन धर्म की रक्षा करनी है और जन-जन तक महर्षि दयानंद सरस्वती का संदेश पहुंचना है, हर घर तक, हर जन तक हमें पहुंचना है। इसके लिए सभी तैयारी करें और आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाएं।

वक्ताओं के इस क्रम में आर्य समाज के वैदिक विद्वान डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार जी ने दिल्ली सभा द्वारा इस समीक्षा बैठक में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई और अपने संदेश में कहा कि अगर पिछले 150 वर्षों में आर्य समाज अपने सेवा कार्यों और योजनाओं का सही प्रबंधन करता तो हम इससे भी अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करते, आर्य समाज के समस्त सेवाकार्य जो यहां हम देख रहे हैं, वे अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय हैं। आपने गुरुकुल कुरुक्षेत्र की उपलब्धियों को साझा करते हुए बताया कि वहां के छात्रों ने आर्य समाज का नाम रोशन करते हुए एन.डी.ए, इंजियरिग, डॉक्टरी और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

सभा द्वारा संचालित समस्त कार्य योजनाओं के महायज्ञ की निरन्तरता के लिए सहयोग की अपील

सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के महापुरुषों के सेवा कार्यों का वर्णन करते हुए अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ द्वारा पूर्वोत्तर के राज्यों में और वनवासी अंचलों में जो शिक्षा, चिकित्सा और सहयोग का कार्य किया जा रहा है, उसके बारे में विस्तार से वर्णन किया और बताया की वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार प्रसार छत्तीसगढ़ से लेकर उन सभी क्षेत्रों में किया जा रहा है जहां पर ईसाई धर्म के प्रचारक अपने मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं, उनका जवाब देने के लिए आर्य समाज लगातार निरंतर अपने सेवा कार्यों को आगे बढ़ा रहा है।

आज का यह कार्यक्रम पूरी तरह से आधुनिक तकनीक के अनुसार प्रदर्शित किया जा रहा था। जिसमें सभा महामंत्री प्रस्तुत प्रकल्प के विषय में संक्षिप्त वर्णन कर रहे थे, तो वही स्क्रीन पर पीटीपी और वीडियो के माध्यम से सिलसिले वार दिखाई जा रहा थी, किस तरह से विषम परिस्थितियों में आर्य समाज अपने सेवा कार्यों, योजनाओं और प्रकल्पों को न केवल क्रियान्वित कर रहा है, बल्कि प्रत्येक गतिविधि का पूरा डेटाबेस भी तैयार कर रहा है, आपने सभा द्वारा संचालित स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य जांच शिविर, कैंसर जांच शिविर, ऑक्सीजन कंसंट्रेटर वितरण और अनेक अन्य स्वास्थ्य से जुड़ी हुई सेवा योजनाओं के विषय में विस्तार से वर्णन किया और वीडियो भी प्रदर्शित की गई। जिसको देखकर उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से सम्पूर्ण स्वास्थ्य से जुड़े हुए सेवा कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। सेवा योजनाओं के इस क्रम में महिला सशक्तिकरण सभा का एक विशेष प्रकल्प है। इसके विषय में आपने विस्तार से बताया की आर्य समाज महिलाओं को स्वरोजगार, स्वावलंबन के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। समय-समय पर उनको नाम मात्र के ब्याज पर धनराशि प्रदान कर अपने पैरों पर खड़ा करने का कार्य कर रहा है।

आप भी दे सकते हैं अपना सहयोग : सभा द्वारा संचालित सेवा कार्यों-योजनाओं की जानकारी एवं सहयोग देने के लिए 9311721172 पर करें सम्पर्क

वेद प्रचार को ध्यान में रखकर आर्य समाज द्वारा वेद परिवार निर्माण योजना को सामने रखते हुए वेदपाठी परिवार बनाने का जो वृहद अभियान है, उसमें आपने पूरी टीम को परिचय कराते हुए बताया कि चारों वेदों के 20000 से अधिक मंत्रों को कंठस्थ करने का जो कार्यक्रम चल रहा है, वह निरंतर गतिशील है। इस कार्य के लिए श्रीमती सुरेखा आर्य जी और उनकी पूरी टीम को उपस्थित आर्यजनों ने बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की।

सभा द्वारा संचालित स्वाध्याय शिविर जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं, उनमें दिल्ली, देहरादून, टंकारा और अब आगे भविष्य में पांडिचेरी में लगाने की भी घोषणा की गई। इन शिवरों का सचित्र वर्णन देखकर उपस्थित आर्यजन अभिभूत हो गए। गुरु विरजानंद संस्कृत कुलम के विषय में बताते हुए आपने कहा कि यह सभा का एक अपने आप में महत्वपूर्ण प्रकल्प है, जिसमें होनहार छोटे-नन्हे विद्यार्थी वेदों के प्रचार-प्रसार और पठन-पाठन के लिए पूर्ण रूप से संस्कृत में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, यह गुरुकुल हरी नगर, एल ब्लॉक में संचालित है। इसके साथ ही दिल्ली सभा द्वारा संचालित वैदिक प्रकाशन जिसके अंतर्गत सैकड़ों पुस्तक, पत्रक, स्टीकर, कॉमिक्स, और अन्य ग्रंथ आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से प्रकाशित किए जाते हैं, जिनको सभा द्वारा अमेजॉन और फ्लिपकार्ट आदि माध्यमों से भी ऑनलाइन प्रचारित किया जाता है। पुस्तक मेलों में आर्य समाज की भूमिका का वर्णन करते हुए आपने बताया की लगभग देश के उन सभी हिस्सों में आयोजित होने वाले पुस्तक मेलों में सभा का स्टॉल लगता है और वहां पर सत्यार्थ प्रकाश उर्दू, अंग्रेजी, बंगाली और ब्रेल लिपि में भी में भी सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जीवनी प्रचारित की जाती है, भविष्य में वेदों को भी ब्रेल लिपि में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। आपने वैदिक प्रकाशन जो कि आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से अनेक पुस्तकों का प्रकाशन करता है उसके माध्यम से रु.10/- में सत्यार्थ प्रकाश और भारत के सभी विश्वविद्यालयों, लाइब्रेरियों, दूतावासों में स्थापित किए जाने के संकल्प की पूर्णता की जानकारी के साथ भविष्य में पांच सितारा होटलों में भी सत्यार्थ प्रकाश की प्रति पहुंचाने की बात की।

आर्य समाज के महत्वपूर्ण सेवा प्रकल्प आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा जो उच्च शिक्षा व्यवस्था में सहयोग का प्रकल्प चलाया जा रहा है, उसके अंतर्गत संघ लोक सेवा आयोग में उच्च पदों पर आसीन हुए विद्यार्थियों के विषय में बताया कि अब तक आर्य समाज द्वारा कोचिंग, भोजन और आवास का सहयोग प्राप्त करके अनेक प्रतिभाएं राष्ट्र सेवा यज्ञ में अहम भूमिका निभा रही हैं। इस क्रम में मूल रूप से बिहार राज्य की एक महिला सब इंस्पेक्टर ने आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त भी किया। आर्य प्रगति प्रोजेक्ट का वर्णन करते हुए आपने बताया की जो विद्यार्थी प्रतिभावान हैं और 12वीं पास के बाद इंजीनियर, डॉक्टर या यूपीएससी की तैयारी करना चाहते हैं उनके लिए यह विशेष प्रकल्प चलाया जा रहा है। आर्य प्रगति प्रोजेक्ट के माध्यम से इस वर्ष आर्य समाज में लगभग 47 लाख रुपए की सहायता कर विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया है, वहीं भविष्य में यह राशि बढ़ाकर 75 लाख तक कर दी जाएगी और इसको आगे भी और विस्तार प्रदान किया जाएगा।

अनेक महानुभावों ने की सभा को वार्षिक एवं मसिक सहयोग देने की घोषणा

विवाह संयोग सेवा का वर्णन करते हुए आपने बताया कि आर्य समाज की युवा पीढ़ी को अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार विवाह करने का, जीवन साथी चुनने का यह एक अच्छा प्लेटफार्म है, इससे पहले अनेक आयोजन किए गए हैं और भविष्य में भी किए जाते रहेंगे। आर्य समाज का बालवाड़ी प्रोजेक्ट जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में एक शिक्षक के रूप में चलाया जाता है, उसका महत्व और परिणाम प्रदर्शित करते हुए आपने उसको और आगे बढ़ाने की बात कही।

- शेष पृष्ठ 4-5 एवं 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य समाज के सेवा कार्यों, प्रकल्पों, योजनाओं और गतिविधियों की समीक्षा संगोष्ठी संपन्न

आदिवासी क्षेत्रों से दिल्ली में सभा के सहयोग से संचालित गुरुकुलों की व्यवस्था का वर्णन करते हुए आपने आर्य गुरुकुल सैनिक विहार, आर्य कन्या गुरुकुल रानी बाग, आर्य गुरुकुल दयानंद विहार, आर्य गुरुकुल तिहाड गांव के विषय में विस्तार से वर्णन करते हुए बताया कि जो बच्चे हिंदी बिल्कुल भी नहीं जानते थे, आज में वेद मंत्रों का उच्चारण कर रहे हैं, भजन गा रहे हैं, संध्या कर रहे हैं और अच्छे स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन का निर्माण कर रहे हैं, यह आर्य समाज का ही सेवा प्रकल्प है जिसमें त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड के बच्चे आज वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से ओत-प्रोत होकर आर्य समाज का नाम रोशन कर रहे हैं। इस विषय में संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खटटर जी ने ऐसे कई विद्यार्थियों का उदाहरण देकर बताया इन गुरुकुलों में पढ़कर विद्यार्थी सेवा के क्षेत्र में समर्पित होकर आगे बढ रहे हैं।

आर्य समाज के सेवा कार्यों का वर्णन करते हुए सभा महामंत्री जी ने बताया कि संपूर्ण भारत के आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं और समस्त आर्य संस्थाओं का एक डाटा कलेक्शन किया जा रहा है। उसके लिए पूरे उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में स्थित आर्य समाजों के अधिकारियों और सभी की एक डेटाशीट बनाई गई है, यह अपने आप में एक अद्भुत कार्य है। आर्य लोकेटर जो मोबाइल एप्लीकेशन है, वह भी सबको बताई गई और दिखाया गया कि किस तरह से विश्व के सभी आर्य समाजों में जाने के लिए आप इसका उपयोग कर सकते हैं। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित और नवनिर्मित स्कूलों की वीडियो भी दिखाई गई। दिल्ली में गुरुकुल, असम, सूरत परिवार की ओर से झापराजान, सरूपाथार और झाबुआ, दीमापुर, नागालैंड, देवघर और सिक्किम में जो नए निर्माण कार्य किए जा रहे हैं, उसको देखकर सभी आर्यजन भाव विभोर हो गए। दिल्ली सभा द्वारा संचालित कार्यालय में कितने कंप्यूटर, कितने लैपटॉप, कितने मोबाइल फोन और कितनी गाड़ियां हैं, यह सब साधन-सुविधा देखकर सभी ने उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा की। आर्य वीर दल एवं वीरांगना दल का परिचय देते हुए बताया गया की पूरी दिल्ली के अंदर जो शाखाएं चल रही हैं, झुग्गी झोपड़ियों के अंदर जो प्रचार कार्य हो रहे हैं, जो नई शाखाओं का निर्माण हो रहा है, उसकी सभी ने हृदय की गहराइयों से प्रशंसा की। पंचकूला में आर्य समाज का केंद्र निर्मित हो रहा है, उसका परिचय कराते हुए श्री आशीष आर्य, श्री मनीष भाटिया जी, श्री खट्टर जी, श्री वाचोनिधि जी, श्री अशोक आर्य जी, श्री विनीत अग्रवाल जी और श्री विवेक आर्य जी इस पूरे प्रोजेक्ट को लीड कर रहे हैं, इसकी भी जानकारी विधिवत दी गई और वहां पर जो शिविरों का आयोजन किया जाता है, चाहे बच्चे-बच्चियों के लिए हो, चाहे आर्य समाज के पुरोहितों के लिए हो, चाहे महिलाओं के लिए हो, सभी को वहां पर प्रशिक्षण प्रदान करके आर्य समाज को सशक्त करने का कार्य किया जाएगा। श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित आयोजनों का विधिवत सबसे परिचय कराया और जेबीएम ग्रुप के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी का विशेष धन्यवाद करते हुए बताया कि चाहे विचार फाउंडेशन हो, पंचकुला का सेंटर हो या दिल्ली सभा के आप संरक्षक हैं, जो भी कार्य दिल्ली सभा आगे बढ़ा रही है, उनमें आपका आशीर्वाद और वरदहस्त हम सब के ऊपर हमेशा बना रहता है। आपने जे.बी.एम. टीम का भी आभार व्यक्त किया, जो वहां पर सारे के सारे सेवा कार्यों को प्रत्यक्ष देख रही थी और उन्होंने विधिवत उसकी समीक्षा भी की और प्रशंसा भी की। इस क्रम में आपने श्री सुरेश चंद्र आर्य जी का भी आभार व्यक्त किया जो 85 वर्ष की अवस्था में अस्वस्थ होते हुए भी पूरा दिन उपस्थित रहकर आशीर्वाद दिया। श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित सभी महानुभावों का हृदय से आभार किया और सभी के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित की।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 की ओर से वहां के अधिकारियों ने संपूर्ण व्यवस्थाएं बड़ी विधिवत और व्यवस्थित की हुई थी। प्रात:काल नाश्ते से लेकर 11:30 बजे जलपान और फिर 2:00 बजे भोजन, सांयकाल 7:00 बजे भोजन आदि की संपूर्ण व्यवस्था अत्यंत मनोहारी और प्रेरक थी।

इस अवसर पर उपस्थित सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए और दिल्ली सभा द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों की प्रशंसा की तथा उन सभी सेवा कार्यों को योजनाओं को, प्रकल्पों को, अपने-अपने क्षेत्र में संचालित करने का भी विश्वास दिलाया। ज्ञात हो कि यह संगोष्ठी प्रात: काल 9:00 बजे से प्रारंभ होकर सायंकाल 6:00 बजे तक अनवरत चलती रही। बीच में जलपान और भोजन के बाद अपने निर्धारित समय अनुसार समस्त अधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे और सभी ने आर्य समाज के बढ़ते हुए सेवा कार्यों में सहयोग करने का भी संकल्प लिया। सायंकाल कार्यक्रम के उपरांत दिल्ली सभा द्वारा क्रय की हुई गाड़ी का भी विधिवत उद्घाटन किया गया जिसमें श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री सुरेंद्र रैली जी और समस्त अधिकारी उपस्थित रहे। प्रेम सोहार्द के वातावरण में संपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के अधिकारियों का परिचय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपस्थित अधिकारियों का परिचय

आर्यसमाज की युवा ईकाई - आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के अधिकारियों एवं सदस्यों के साथ श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं श्री धर्मपाल आर्य

धर्म प्रचारक प्रकल्प में कार्यरत संवर्धकों एवं आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 के अधिकारियों प्रधान श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्री अमर सिंह पहल का परिचय

ज्ञानज्योति पर्व आयोजन समिति के अध्यक्ष, जेबीएम ग्रुप के चेयरमेन एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी द्वारा 2 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय पूर्णकालिक संगोष्ठी में उपस्थित आर्यसमाज के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों को दिया गया विशेष उद्बोधन

देश की दिशा और दशा को बदलने के लिए सामर्थ्यवान है - आर्य समाज

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर आयोजित संगोष्ठी कार्यक्रम में उपस्थित माननीय श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, भाई विनय आर्य जी, श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्री सुरेंद्र रैली जी, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली प्रदेश, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ और विभिन्न संस्थाओं से पधारे सभी प्रतिष्ठित अधिकारीगण, आयोजक मंडल, उपस्थित आर्यवीरों, देवियों और सज्जनों, आप सभी को सादर नमस्ते !

साथियो, मुझे आज इस एक दिवसीय संगोष्ठी कार्यक्रम में आप सबके बीच उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सर्वप्रथम, मैं आर्य समाज के उन महान कार्यों और सिद्धांतों की सराहना करना चाहूंगा, जिनके माध्यम से समाज में सुधार और उत्थान के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं। आर्य समाज ने 150 वर्ष पूर्व अपने स्थापना काल से ही समाज में सुधार, शिक्षा और सामाजिक जागरण के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया है। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित यह आंदोलन समाज में एक नई दिशा और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कार्य कर रहा है और इसके प्रकल्पों और योजनाओं ने लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आर्य समाज द्वारा संचालित प्रकल्पों की बात करें, तो यह प्रकल्प केवल समाज को सुधारने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण के लिए भी हैं। चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो, समाज कल्याण में हो, या फिर पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए प्रयास हों, आर्य समाज के प्रकल्प देश की दिशा और दशा को बदलने का सामर्थ्य रखते हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से इन प्रकल्पों से जुड़ा हुआ हूं और मुझे खुशी है कि हम नई परियोजनाओं पर भी कार्य कर रहे हैं।

इनमें से कुछ प्रकल्प गरीब और वंचित वर्गों के लिए शिक्षा सुविधा प्रदान करने हेतु कार्य कर रहे हैं जैसे कि आर्य प्रगति स्कॉलरशिप, आर्य प्रतिभा विकास, सहयोग प्रकल्प, बालवाड़ी परियोजना आदि। साथ ही स्वास्थ्य जागरूकता अभियान एवं युवाओं के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण हेतु भी कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। ये सभी योजनाएं वास्तव में सराहनीय हैं।

आज के इस प्रतिस्पर्धी दौर में किसी भी संस्था को सफल बनाने के लिए Management Strategies का उपयोग करना आवश्यक है। मुझे विश्वास है कि यदि हम आर्य समाज में भी इन Strategies का प्रयोग करें तो हम अपने लक्ष्यों को और प्रभावी तरीके से प्राप्त कर सकते हैं। इसके माध्यम से हम बेहतर निर्णय ले सकेंगे, कार्यों की गुणवत्ता में सुधार कर सकेंगे, और हमारी योजनाओं का प्रभाव समाज पर और अधिक होगा।

आज के इस युग में तकनीक का प्रयोग हर क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा है और आर्य समाज भी इससे अछूता नहीं है। हमने आर्य समाज के कार्यों में तकनीक का समावेश करके इसके दायरे को और व्यापक बनाने का प्रयास किया है। Digital Platform के माध्यम से आर्य समाज की शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण की योजनाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का कार्य हो रहा है। इससे हमें अपने प्रकल्पों की निगरानी और समीक्षा में भी सहायता मिल रही है, जिससे हम तेजी से और सटीक रूप से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते है।

आर्य समाज के कार्यों को और भी प्रभावी बनाने के लिए हमें सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। हम सभी को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि आर्य समाज न केवल आत्मनिर्भर बने, बल्कि दूसरों को भी आत्मनिर्भरता की दिशा में मार्गदर्शन करे।

सज्जनों, मैं कुछ बातें गंभीरता से कहना चाहता हूं, हम चाहते हैं कि दयानंद की यह वाटिका सदैव हरी-भरी रहे, इसके लिए हमें अपनी संतानों को, और आगे-आने वाली पीढ़ियों को आर्य समाज से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना होगा ! साथ ही, हर एक आर्य समाजी को प्रण लेना होगा कि हर एक आर्य समाजी तन, मन, धन से आर्य समाज के आंदोलन में सहयोग करेगा ताकि आर्य समाज की प्रत्येक योजना सफल हो।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आज इस गोष्ठी में आप सभी के समक्ष अपने कुछ अनुभव साझा कर पा रहा हूं। जैसा कि आप सभी जानते हैं, मैंने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा श्रेष्ठ ग्रुप के निर्माण और विकास में लगाया है।

इस सफर में मैंने व्यवसाय प्रबंधन के कई सिद्धांतों और तकनीकों का उपयोग किया है, जिनसे हमारी कंपनी निरंतर सफलता की ओर बढ़ रही है। आज मैं आपके समक्ष कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तत्वों पर बात करूंगा, जिनका उपयोग आर्य समाज में भी बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है।

JBM ग्रुप की सफलता में एक महत्वपूर्ण भूमिका Business Intelligence यानी व्यापारिक सूझबूझ ने निभाई है। सही जानकारी का सही समय पर उपयोग करने से हम हमारे व्यावसायिक क्षेत्र में बढ़त हासिल कर सके। इसी प्रकार, आर्य समाजियों को भी अपने प्रकल्पों और कार्यों में Data और Information का सही उपयोग करना चाहिए। यह जानना आवश्यक है कि समाज के किन क्षेत्रों में अधिक कार्य करने की आवश्यकता है और किन कार्यों से अधिक लाभ मिल सकता है। Data आधारित निर्णय हमेशा सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

JBM ग्रुप में हम Feedback और Review को अत्यधिक महत्व देते हैं। बिना Feedback के हम अपने काम की गुणवत्ता और उसकी प्रभावशीलता का सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। इसी तरह, आर्य समाजियों को भी समाज और इसके लाभार्थियों से नियमित रूप से फीडबैक लेना चाहिए। यह जानना

-शेष पृष्ठ 7 पर

संगोष्ठी में पधारे विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारी एवं आर्य संगठन - शुद्धि सभा, दलितोद्धार सभा, आर्य अनाथालय, दयानन्द सेवाश्रम संघ, आर्य पुरोहित सभा, वेद प्रचार मंडल के अधिकारीगण

आर्यसमाज लांग इजलैंड अमेरिका द्वारा प्रदत्त नए वेद प्रचार वाहन (अरबेनिया) का उद्घाटन एवं संगोष्ठी में उपस्थित जे.बी.एम. परिवार के साथ श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य एवं श्री सुरेशचन्द्र आर्य

साप्ताहिक स्वाध्याय

नियमों की दृढ़ नींव

गतांक से आगे-

यदि किसी को ऊपर दिये नियमों से उदारता का भली-भांति पता न लगे तो वह निम्नलिखित नियमों पर भी दृष्टिपात करे। निश्चित है कि उसका भ्रम दूर हो जायगा-

4) 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' क्या एक धर्म का संस्थापक अपने अनुयायियों के लिए इससे अधिक उदार नियम का भी निर्माण कर सकता है?

9) 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'

लाहौर वाले दसों नियमों में एक असीम सत्य प्रेम, एक अनन्त उदार हृदयता और एक व्यापक उद्देश्य की सूचना मिलती है। जिस आत्मा में इन तीनों गुणों का निवास हो, यदि उसे 'महर्षि की आत्मा' न कहें तो और किसे कहें?

लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हो गई। समाज के अधिवेशनों के लिए एक मकान किराये पर ले लिया गया। महर्षि दयानन्द उसमें प्रति सप्ताह धर्मोपदेश किया करते थे। समाज के प्रधान लाला मूलराज जी एमए और मन्त्री लाला साईंदास जी नियुक्त हुए। कई भक्तों ने महर्षि से प्रार्थना की कि आप आर्यसमाज के गुरु या आचार्य पद को ग्रहण करें। महर्षि ने उत्तर दिया कि इस प्रस्ताव से गुरुडम की बू आती है। मेरा उद्देश्य तो गुरुडम की जड़ काटना है, उससे मुझे घृणा है। तब दूसरे भक्त ने प्रस्ताव किया कि यदि महर्षि जी आचार्य या गुरु नहीं बनना चाहते तो कम-से-कम आर्यसमाज के परम सहायक की पदवी तो अवश्य ही स्वीकार करें। ऋषि का उत्तर प्रश्न के रूप में था। आपने पूछा कि यदि मुझे आर्यसमाज का परम सहायक कहोगे तो परमात्मा को क्या कहोगे? फिर यह विचार कर कि आर्य पुरुष सर्वथा इन्कार से उदास न हों, उन्होंने समाज के सहायकों में नाम लिखाना अंगीकार कर लिया। यही महर्षि दयानन्द का ऋषित्व था। जिन लोगों को मौका मिला, वे पैगम्बर और रसूल बनने से नहीं कतराए; जिन्हें इतनी बड़ी हिम्मत न हुई, वे आचार्य, गुरु या नबी बन गए। महर्षि का ही ऐसा हृदय था कि आचार्य, गुरु या परमसहायक तक के पदों को स्वीकार नहीं किया। कारण यही था कि महर्षि दयानन्द अपने को परमात्मा के ज्ञान का प्रचारक और सत्य का साधकमात्र समझते थे, इससे अधिक कुछ नहीं। वहां न बड़प्पन की चाह थी और न गुरुपन की बू। वहां तो एक ईश्वर पर विश्वास था और सत्य पर अटल श्रद्धा थी। यही कारण था कि इस वीर की एक ही गरज से सदियों से खड़े गुरुडम के गढ़ हिल जाते थे, झुक जाते थे और गिरकर चकनाचूर हो जाते थे। यदि महर्षि में अपनी बड़ाई या लौकिक बढ़ती की कुछ भी कामना होती तो उन्हें ऐसी अद्भुत सफलता कभी प्राप्त न होती।

लाहौर में नियम और उपनियम जुदा कर दिये गए थे। उपनियम अन्तरंग सभा ने बनाए थे। जिस समय अन्तरंग सभा में उपनियमों पर विचार हो रहा था, महर्षि जी अकस्मात् वहां पहुंच गए। सभासदों ने प्रस्तुत विषय पर महर्षि जी की सम्मति मांगी। महर्षि ने कहा कि मैं आपकी अन्तरंग सभा का सभासद् नहीं हूं, इसलिये मुझे सम्मति देने का अधिकार नहीं है। सर्वसम्मति से महर्षि जी को उसी समय अन्तरंग सभा का प्रतिष्ठित सभासद् बना दिया। उपनियम तैयार हो जाने पर स्थानीय समाज का संगठन पूरा हो गया। समाज मन्दिर में नियमपूर्वक अधिवेशन होने लगे।

इस प्रकार लाहौर के कार्य से निश्चित होकर महर्षि ने प्रान्त का भ्रमण आरंभ किया। आपने अमृतसर, गुरुदासपुर, जालन्धर, फिरोजपुर छावनी, रावलपिंडी, गुजरात, वजीराबाद, गुजरांवाला तथा मुल्तान छावनी आदि में पधारकर सदुपदेश दिये। प्राय: आपके पहुंचते ही आर्यसमाज की स्थापना हो जाती थी। आर्यसमाज की स्थापना से पौराणिक गढ़ में और पादरी दल में भी हलचल पैदा हो जाया करती थी। सभी स्थानों पर इधर पौराणिकों और उधर पादरियों से संग्राम करना पड़ता था। पंजाब का पौराणिक दल पण्डितों से बिल्कुल शून्य था। प्रान्तभर में कोई भी अच्छा पण्डित नहीं था। वेद का ज्ञान तो

कहां, अर्वाचीन का भी कोई अच्छा ज्ञाता मिलना कठिन था। यही कारण था कि पंजाब में पौराणिक दल की ओर से अधिक असभ्यता का व्यवहार होता था। वे लोग पाण्डित्य का स्थान हर गाली-गलौज और ईंट-पत्थर से पूरा करना चाहते थे।अमृतसर और वजीराबाद आदि शहरों में व्याख्यानों या शास्त्रार्थों के स्थान में गाली और पुस्तकों के प्रमाण के स्थान में कंकर के प्रयोग को काफी समझा गया। पादरियों के साथ शास्त्रार्थ कम हुए, परन्तु उनके चंगुल में फंसे हुए बहुत-से अबोध बटेरे महर्षि दयानन्द ने बचाए। -**क्रमश:**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Solid foundation of rules

The dogmas who want to understand God's infinite store of knowledge as closed in one, two or more rooms, they should pay attention to the liberal thought of Swami Dayanand. The first rule strikes at the root of leniency. He is a staunch enemy of Panthaipan. He shatters the claims of those who wan't to be the bearers of divine knowledge. Many great people claim that they inspired Swamiji to change the rules and the difference that is visible is the result of his generosity. The inspiration may be from some other side, there is no doubt that whatever changes were made were done with the permission of Swamiji. If there is more liberality in those rules, then the liberality of Rishi Daya nand's thoughts is the reason for it. If someone does not know about generosity from the above rules, then he should also look at the following rules. It is sure that his illusion will be dispelled -

4) One should always be eager to accept the truth and give up the untruth. Can the founder of a religion create a more liberal rule for his followers?

9) 'Each one should not be satisfied with his own progress, but should understand his progress in the progress of all.'

The Lahore Ten Commandments inform of an infinite true love, an eternally generous heart, and a comprehensive purpose. The soul in which these three qualities reside, if it is not called the soul of the sage, then what else can it be called?

Arya Samaj was established in Lahore. A house was taken on rent for the meetings of the society. Rishi Dayanand used to preach in it every week. The head of the society Lala Mulraj ji MUA and minister Lala Saindas ji were appointed. Many devotees requested the sage to accept the post of 'Guru or Acharya' of the Aryasamaj. The sage replied that 'this proposal smacks of Gurudam'. My aim is to cut the root of Gurudam, I hate it. Then the second Bhatt proposed that if Swami ji does not want to become Acharya or Guru, then at least he must accept the title of 'Param Sahayak of Arya Samaj'. The sage's answer was in the form of a question. He asked, 'If you call me the supreme helper of Arya Samaj, then what will you call God?' Then thinking that the Arya men should not be depressed by complete rejection, they accepted to enroll themselves in the helpers of the society. This was the sage of Rishi Dayanand. Those who got the opportunity did not shy away from becoming prophets and messengers; those who did not have such courage became Acharyas, Gurus or Nabis. The sage had such a heart that he did not accept the posts of Acharya, Guru or Paramsahayak. The reason was that Rishi Dayanand considered himself a propagator of the knowledge of God and a seeker of truth, nothing more. There was neither the desire for greatness nor the smell of mastery. There was faith in one God and unwavering faith in the truth. This was the reason that due to a single roar of this hero, the trong holds of Gurudam, which had been built for centuries, used to shake, used to bend and used to fall and become shattered. If the sage had any desire for his glory or worldly growth, he would never have achieved such a wonderful success.

The rules and bye-laws were separated at Lahore. The bye-laws were made by the Inner Assembly. When the bye-laws were being discussed in the intimate meeting, Swamiji suddenly reached there.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

जन्मदिवस 14 अक्तूबर पर विशेष स्मरण

आर्ष विद्या के उन्नायक-पंडित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु

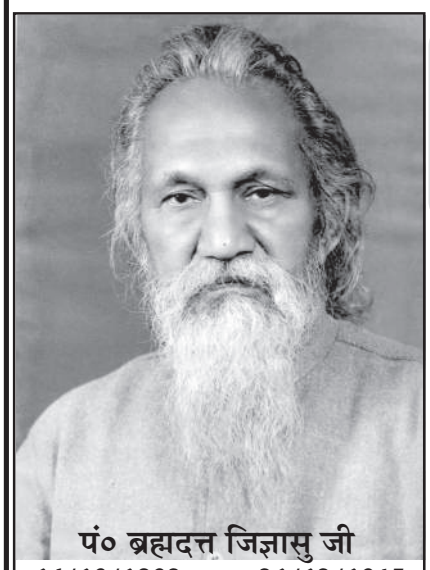

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी
14/10/1892 - 21/12/1965

डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी सेवानिवृत्त प्रोफेसर रामजस कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय आर्ष परंपरा के मर्मज्ञ विद्वान हैं। प्रस्तुत ऐतिहासिक आलेख में उन्होंने आर्ष विद्या के धनी पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, युधिष्ठिर मीमांसक, स्वामी पूर्णानंद और ''रामलाल कपूर ट्रस्ट'' की स्थापना, विरजानंद साधु आश्रम उत्तर प्रदेश के माध्यम से आर्ष विद्या के प्रचार-प्रसार और विस्तार का संक्षेप में प्रेरणाप्रद वर्णन किया है।

- डा. रघुवीर वेदालंकार

स्वामी विरजानंद दण्डी वर्तमान में आर्ष विद्या के महानायक हैं। विरजानन्द जी के समय में आर्ष विद्या लगभग विलुप्त सी हो गयी थी। स्वामी जी ने न केवल इसका पुन: बीजारोपण किया बल्कि अपनी योग्यता से इसे शिखर पर सम्मानित स्थान भी प्रदान किया। जब स्वामी जी मथुरा में थे, तब तक योग्य छात्रों ने उनसे व्याकरण सीखा। स्वामी दयानंद पंडित, उदय प्रकाश और पंडित युगल किशोर जिन्होंने आर्ष विद्या को सदैव आगे बढ़ाया और इसके प्रचार-प्रसार और विस्तार को सदैव महत्व दिया। स्वामी दंडी जी के निधन के बाद, पंडित युगल किशोर जी पहले सक्षम शिष्य थे जिन्होंने जीवन भर अष्टाध्यायी की शिक्षा दी।

स्वामी जी के समय आर्ष विद्या के अध्यापन एवं अध्ययन की दो प्रमुख शाखाएँ थी। ये दोनों शाखाएँ अभी भी प्रतिकूल सर्वज्ञता में हैं। पंडित उदय प्रकाश, पंडित गंगादत्त (स्वामी शुद्धबोध तीर्थ), आचार्य राजेंद्रनाथ जी (स्वामी सच्चिदानंद), पंडित विश्व प्रकाश जी, आचार्य भगवान देव जी शाखा का एक हिस्सा थे। उनके बाद उनके बहुत से अनुयायी हो गये। आचार्य भगवान देव जी के कई शिष्य इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। अगले भाग में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं. युधिष्ठिर मीमांसक आदि अनेक शिष्यों के साथ थे। वे आर्ष ग्रंथों का अध्यापन तो करते ही रहे साथ ही मीमांसक जी ने संस्मरण शोध भी किया था। स्वामी सर्वानंद जी ने विरजानंद साधु आश्रम की स्थापना की थी, जो कि उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के हरदुआगंज में स्थित है। उसी विरजानंद साधु आश्रम में पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने पण्डित शंकर देव जी और पण्डित बुद्ध देव जी के साथ मिलकर शिक्षा देना शुरू किया। जिज्ञासु जी को आश्रम को आगे बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता थी। गुरुकुल के रूप में साधु आश्रम उत्तर प्र. कालांतर में हरदुआगंज से अमृतसर के मजीठा रोड में गंडासिंग गाँव में स्थानांतरित हो गया, जो अमृतसर से चार मील की दूरी पर था।

जिज्ञासु जी शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी शामिल थे। उन्होंने अपने छात्रों के साथ शुद्धि आंदोलन में भी भाग लिया, जिसकी शुरुआत स्वामी श्रद्धानंद जी ने की थी। अमृतसर में आर्ष विद्या केन्द्र चलाने में कठिनाई होने के कारण, उन्होंने 1926 में इसे काशी में ले जाने का फैसला किया, बुलानाला में आर्य समाज के पास एक किराए के घर में इसे स्थानांतरित किया, आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि छात्रों को अन्नक्षेत्र में भोजन करना पड़ता था, जो पहले संस्कृत छात्रों के लिए तैयार किया गया था।

जिज्ञासु जी की हिम्मत थी कि वे विद्वानों के शहर में आर्ष शिक्षा प्रणाली की लौ को आगे बढ़ा सकते थे, बावजूद खराब परिस्थितियों में आर्थिक स्थिति के कारण, जिज्ञासु जी 1928 में अमृतसर वापस लौट आए। उसी समय, एक प्रसिद्ध व्यवसायी लाला रामलाल के पुत्र ने अपने पिता की याद में **''रामलाल कपूर ट्रस्ट''**, की स्थापना की 26 फरवरी 1928 को की। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक जी ने कपूर ट्रस्ट के माध्यम से एक महान अनुसंधान का कार्य किया।

1932 में जिज्ञासु जी अपने छात्रों के साथ काशी वापस लौट आए। निरंतर मेहनत के साथ, उन्होंने कई वर्षों तक आर्ष शिक्षा की लौ को जलाए रखा। आर्ष शिक्षा की यही लौ आज भी रेवली (सोनीपत) में **''रामलाल कपूर ट्रस्ट''** के नाम से छात्रों का मार्गदर्शन कर रही है। यह सब आचार्य जिज्ञासु जी की मेहनत और तपस्या का परिणाम है।

आचार्य ब्रह्मदत्त जिज्ञासु पादवाक्य प्रमदज्ञ के विद्वान थे। उन्हें वाराणसी शहर में प्रसिद्धि मिली थी। उन्होंने **"अष्टाध्यायी पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि"** नामक एक पुस्तक लिखी। उन्होंने वेदवाणी पत्रिका शुरू की और **''रामलाल कपूर ट्रस्ट''** के माध्यम से इसका संपादन किया। वेदवाणी वीरेंद्र शास्त्री द्वारा स्थापित की गई थी। वेदवाणी अभी भी एक उच्च-स्तरीय पत्रिका है, जहां कई अन्य पत्रिकाएं अपनी प्रसिद्धि खो चुकी हैं। वेदवाणी उनमें से एक दुर्लभ पत्रिका है। वर्तमान में आचार्य प्रदीप जी पत्रिका और शिक्षा दोनों जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से संभाल रहे हैं।

महर्षि दयानंद के यजुर्वेद भाष्य पर उनकी एक पुस्तक लिखने की इच्छा थी, जिसका नाम यजुर्वेद-भाष्य-विवरण था। लेकिन उन्होंने केवल 15 अध्याय पूरे किए। 1965 में, महान साधु, पादवाक्य प्रमदज्ञ आचार्य जिज्ञासु जी ने अंतिम सांस ली। वे न केवल आर्य समाज के उच्च विद्वान थे, बल्कि काशी में सानातनी विद्वानों में भी उनका बहुत सम्मान था।

आचार्य जिज्ञासु जी एक महान विद्वान और साधु थे। उन्होंने आर्ष विद्या के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया और अपने जीवन को शिक्षा और सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित किया। **- संपादक**

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज जनकपुरी ए ब्लाक
नई दिल्ली-110058

प्रधान : श्री वीरेन्द्र सरदाना
मन्त्री : श्री सुरेन्द्र सिंह तोमर
कोषाध्यक्ष : श्री जगदीश ग्रोवर

पृष्ठ 2 का शेष

आगे बढ़ चुका है और अंतरिक्ष में सैटेलाइट तक भेजे जा रहे हैं, वहां इंसानों की बलि दी जाती है और बेमतलब के रीति-रिवाज माने जाते हैं। विश्वास और अंधविश्वास के बीच का अंतर यही है कि "अगर कोई रिवाज, उसके पीछे के तर्क को लेकर, सवाल उठाए बिना मान जाता है, तो उसे अंधविश्वास कहते हैं। अगर कोई व्यक्ति रिवाज के पीछे के तर्क को नहीं परख पाता, तो यह खतरनाक हो सकता है।" उन्हें लगता है कि हल्दी, मुर्गी, पत्थरों, संख्याओं और रंग जैसी चीजों को शक्तिशाली समझना अवैज्ञानिक है और इन्हें वैज्ञानिक कहे जाने के कारण कई जानें जाती हैं। जबकि अंधविश्वास आपको कर्महीन और भाग्यवादी बनाते हैं। हमारे समाज में कुछ ऐसी मान्यताएं प्रचलित हैं जिन्हें अंधविश्वास कहा जाता है। हालांकि कुछ लोगों के लिए यह आस्था का सवाल हो सकता है। हम यह नहीं जानते कि सत्य क्या है, लेकिन इन अंधविश्वासों के कारण भारत की अधिकांश जनता वहमपरस्त बनकर निर्णय हीन, डरी हुई और धर्मभीरू बनी हुई है।

- संपादक

पृष्ठ 5 का शेष

आवश्यक है कि आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों का वास्तविक प्रभाव क्या है और कैसे इसे और बेहतर किया जा सकता है। इसी प्रकार योजनाओं का सही Execution, Control, Management और Presentation हमें नई ऊंचाई पर पहुंचा सकता है।

मैं इस अवसर पर आयोजन समिति और सभी संबंधित teams को विशेष धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने इस संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए दिन-रात मेहनत की है। यह आपकी कड़ी मेहनत और सामूहिक प्रयासों का परिणाम है कि हम आज इस मंच पर एक साथ हैं और आर्य समाज के भविष्य के बारे में विचार-विमर्श कर रहे हैं।

अंत में, मैं एक बार फिर इस आयोजन के लिए आयोजकों और सभी उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूं। आइए, हम सब मिलकर आर्य समाज के महान कार्यों को और भी ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प लें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाएं। धन्यवाद।

जय हिन्द-जय भारत! वंदे मातरम !

शोक समाचार

पद्मविभूषण श्री रतन टाटा का निधन

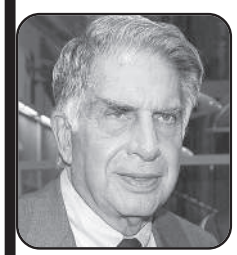

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी, पद्मविभूषण एवं पद्मभूषण से सम्मानित, टाटा ग्रुप के चेयरमैन श्री रतन टाटा जी का दिनांक 9 अक्तूबर, 2024 को लगभग 86 वर्ष की आयु में मुम्बई के ब्रीच कैंडी अस्पताल मे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ मुम्बई में हुआ। आर्यसमाज की ओर से विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों से श्री रतन टाटा जी को श्रद्धांजलि दी गई और राष्ट्रोत्थान में उनके द्वारा दिए गए योगदान को स्मरण किया गया।

श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा को भ्रातृशोक

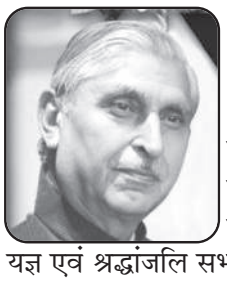

आर्यसमाज कीर्ति नगर के सदस्य एवं पूर्व अधिकारी श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा जी के भाई श्री रविन्द्र कुमार बुद्धिराजा जी का 10 अक्तूबर, 2024 को लगभग 75 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनका उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 12 अक्तूबर, 24 को आर्यसमाज कीर्ति नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित निजी परिवाजनों एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

खेद व्यक्त : खेद है कि प्रेस में तकनीकी खराबी होने के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक के गत अंक 46-47 वर्ष 47 दिनांक 30 सितम्बर से 06 अक्तूबर एवं 7 अक्तूबर से 13 अक्तूबर 2024 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - *सम्पादक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 अक्तूबर, 2024 से रविवार 20 अक्तूबर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 17-18-19/10/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16, अक्तूबर, 2024

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं संस्थाओं की ओर से

महर्षि दयानन्द सरस्वती

200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

141 वें

निर्वाण दिवस

की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन

कार्तिक, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रमी सम्वत् 2081, तद्नुसार

बुधवार 30 अक्टूबर 2024

समय : अपराह्न 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक

कार्यक्रम

कार्यक्रम : यज्ञ, भजन, ध्वजारोहण, महर्षि जीवन भव्य नाटिका

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार रैली	मनीष भाटिया	आर्य सतीश चड्ढा
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामंत्री
9810855695	9910341153	9313013123

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पं.)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन

रविवार 1 दिसंबर 2024, प्रातः 11 बजे से

स्थान : आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 01

अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण

पंजीकरण करवाने की अंतिम तिथि 25.11.24

तभी पुस्तिका में विवरण प्रकाशित होगा

bit.ly/parichay2024

अथवा

QR कोड स्कैन करें

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें : 9311721172

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए

उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण

(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹ 80, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 60

विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120, प्रचारार्थ मूल्य ₹80

पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹50

विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100

स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹120

उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100, प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250, प्रचारार्थ मूल्य ₹160

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300, प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph : 011-43781191, 09650522778

E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002

91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह